एक शूरवीर जो लड़ने से डरता था

एक शूरवीर जो लड़ने से डरता था

बहुत समय पहले, जब शूरवीरों का काल था, सर फ्रैड के बारे में कहा जाता था कि वह दिलेरों में दिलेर और शूरवीरों में शूरवीर थे-सुंदर लेडी वैंडिलिन विशेषतः ऐसा सोचती थी.

लेकिन यह बात चिड़चिड़े मैल्विन को बिलकुल अच्छी न लगती थी. वह एक निर्दयी दबंग था जो उदारचित शूरवीर से ईर्ष्या करता था.

सर फ्रैड की प्रतिष्ठा को सदा के लिए धूल में मिलाने का दृढ़ संकल्प कर, अपने लंबे निर्वासन को खत्म कर, वह लौट आया. चिड़चिड़ा मैल्विन चोरी-छिपे सर फ्रैड पर हर पल नज़र रखने लगा ताकि उनकी किसी कमज़ोरी का पता लगा सके.

एक दिन जब सर फ्रैड बहादुरी का एक कारनामा करके लौटे तो चिड़चिड़े मैल्विन ने देखा कि उनकी तलवार पर खून के बजाय घास के निशान थे. वह खुशी से बोला, “अहा.”

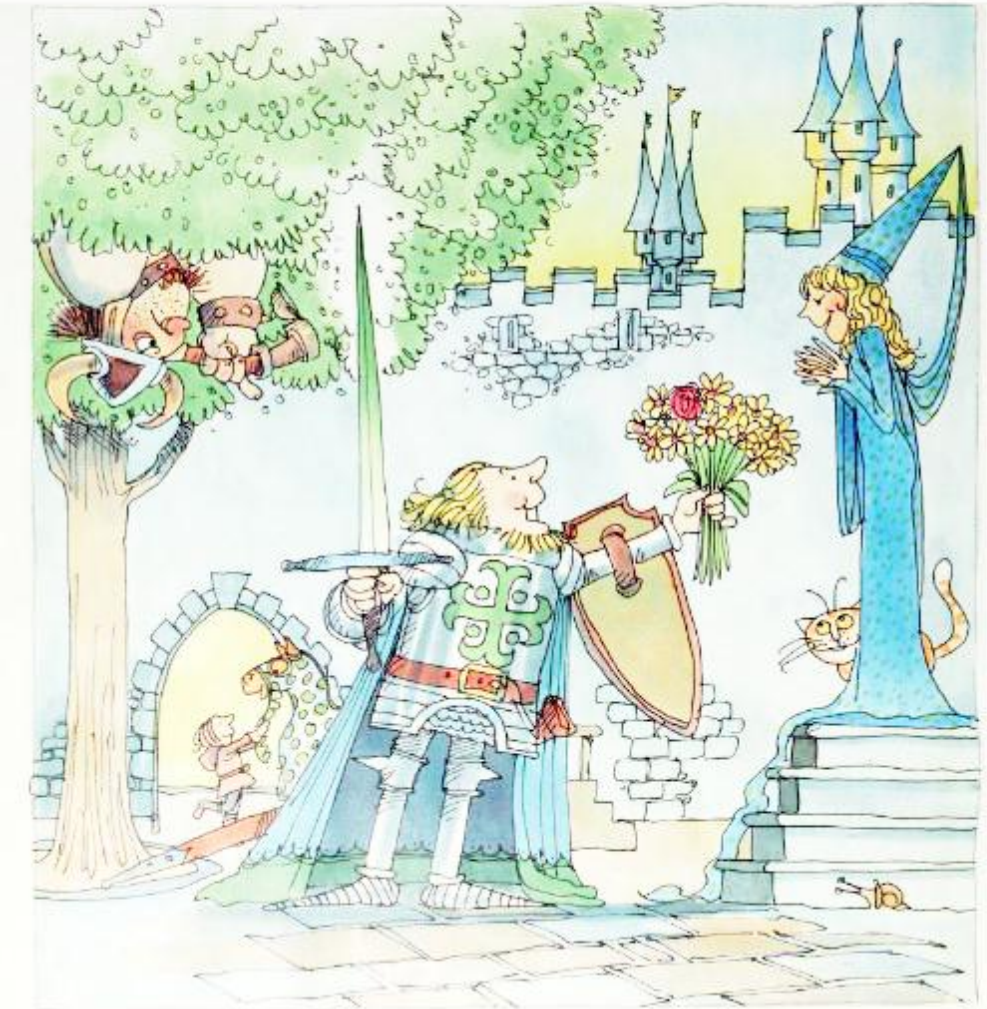

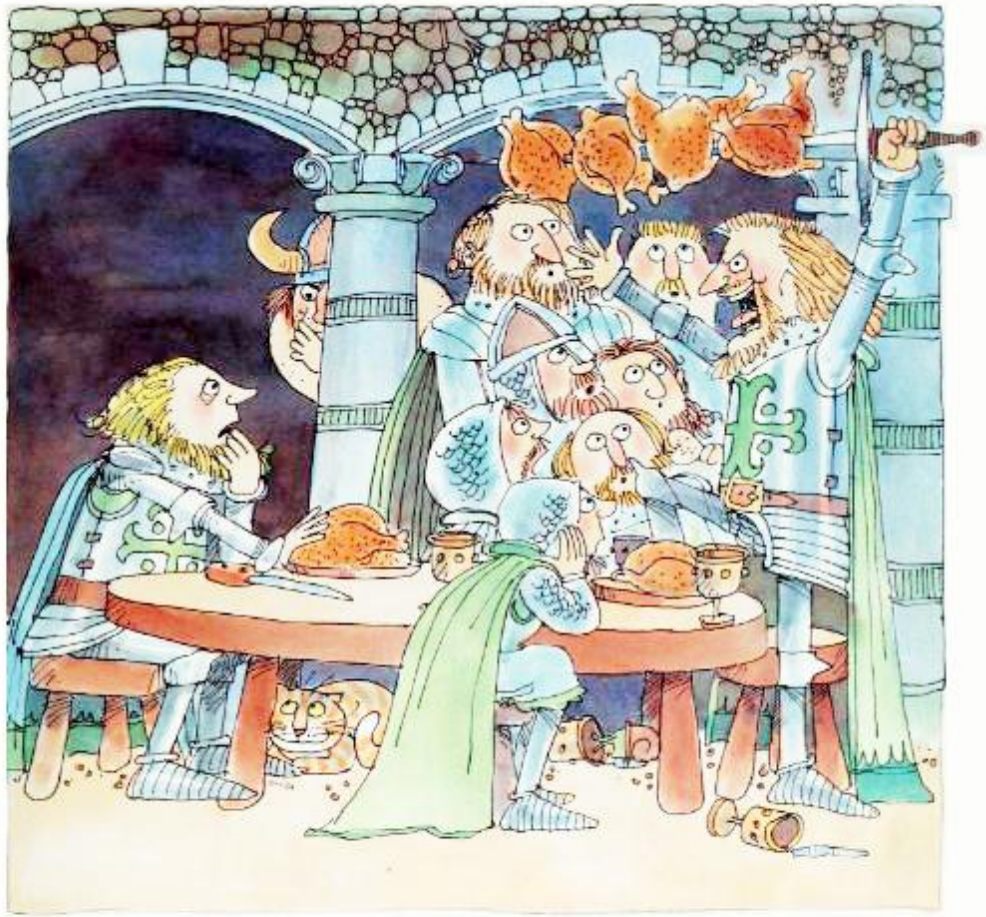

बाद में चिड़चिड़े मैल्विन ने देखा कि जब अन्य शूरवीर अपनी खूनी लड़ाइयों की कहानियाँ सुना रहे थे तब सर फ्रैड का चेहरा पीला पड़ गया था और वह क्षमा याचना कर खाने की मेज़ से उठ आये थे.

शायद सर फ्रैड उतने दिलेर और शूरवीर न थे जितना लोग उन्हें समझते थे? अगर लहू को देखकर वह घबरा जाते थे तो शायद वह लड़ने से भी डरते हों?

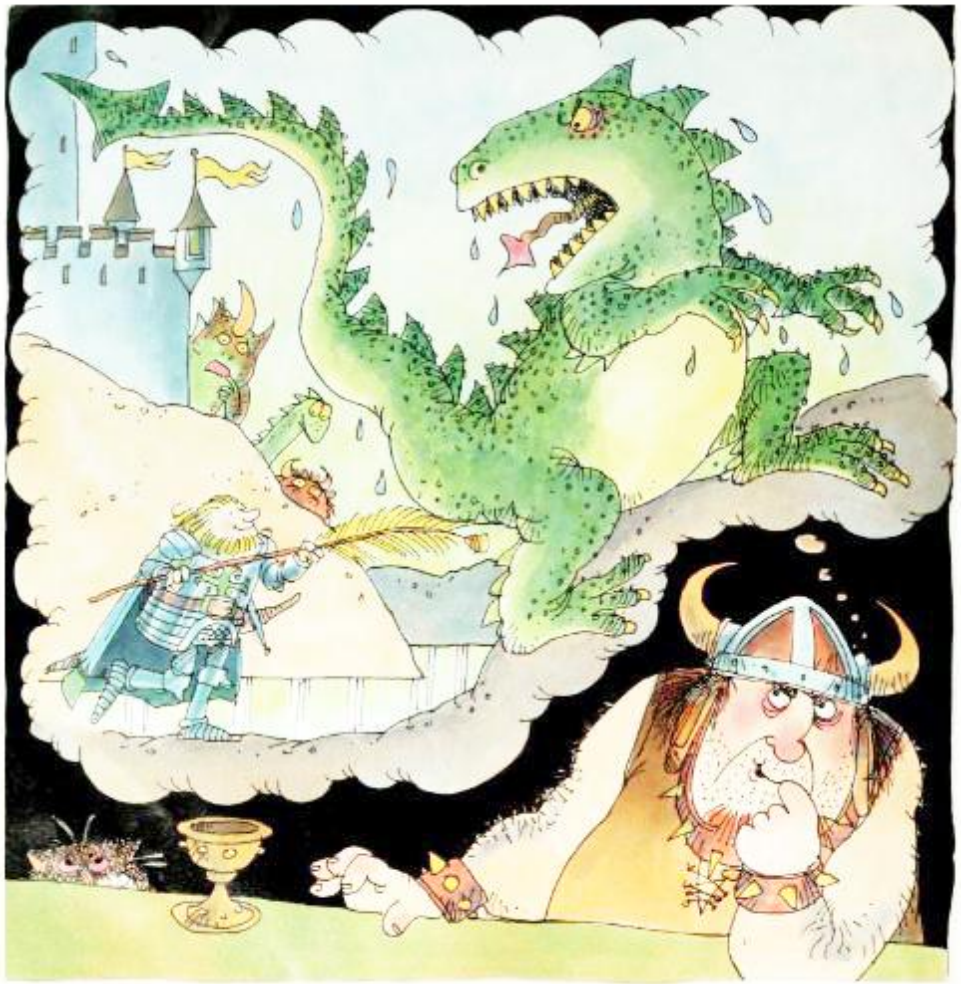

चिड़चिड़ा मैल्विन अपने कक्ष में आ गया और उन घटनाओं के बारे में सोचने लगा जब सर फ्रैड लड़ने से पीछे हट गये थे. उसे याद आया कि सर फ्रैड ने किले की खन्दक से भीमकाय जानवरों को, उनका सिर काटने के बजाय, उनकी पूँछ में गुदगुदी कर भगाया था.

उसे ध्यान आया कि सर फ्रैड ने लेडी वैंडिलिन को दस सिरों वाले डरावने ड्रैग्न से बचाया था: उन्होंने उस ड्रैग्न की दस भयंकर गरदनों पर तलवार चलाने के बजाय उसे चालाकी से मूर्ख बनाकर लेडी को ड्रैग्न का निवाला बनने से बचा लिया था.

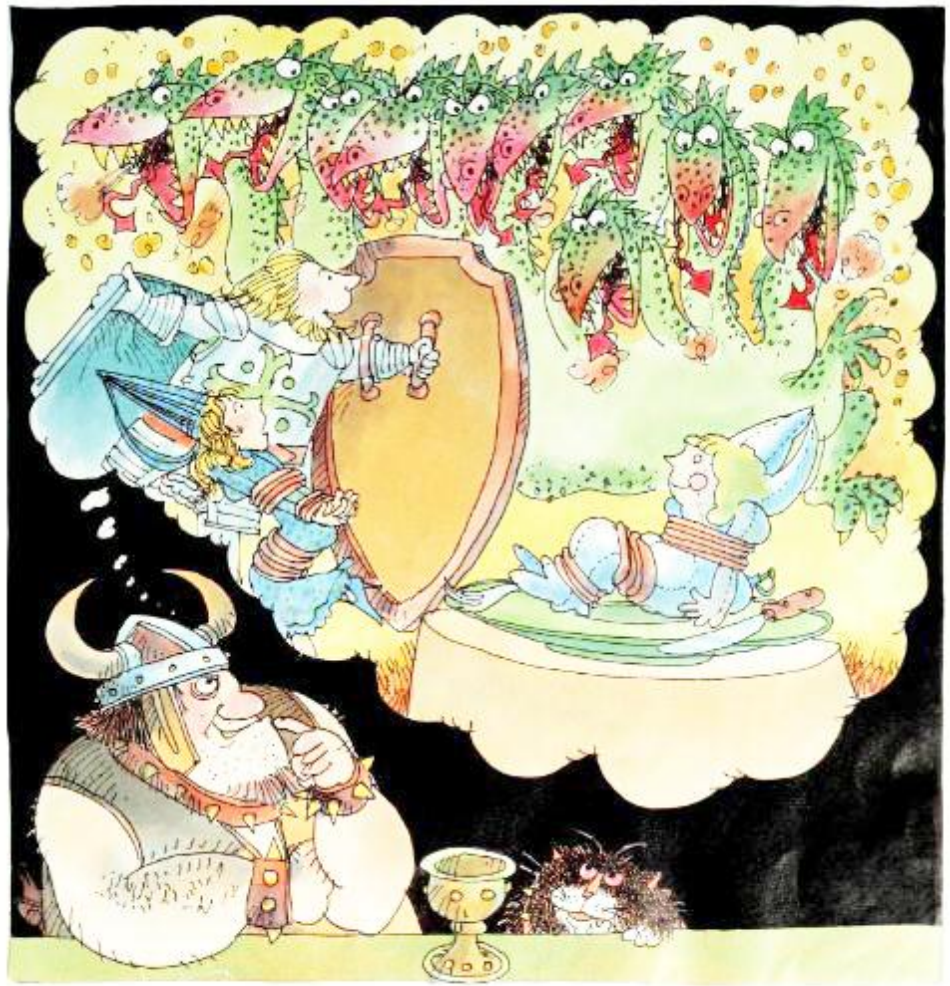

पनी बात को सिद्ध करने के लिए चिड़चिड़े मैल्विन ने सर फ्रैड की रात में
वाली टोपी पर टमाटर की चटनी लगा दी, जिसे देखकर महान शूरवीर
हुए अपने शयनकक्ष से भाग गये.

फिर चिड़चिड़े मैल्विन ने नहाने के पानी में लाल रंग मिला दिया जिसे
देख कर सर फ्रैड रोते-चिल्लाते हुए भाग खड़े हुए, “यहाँ खूनखराबा हुआ है.”

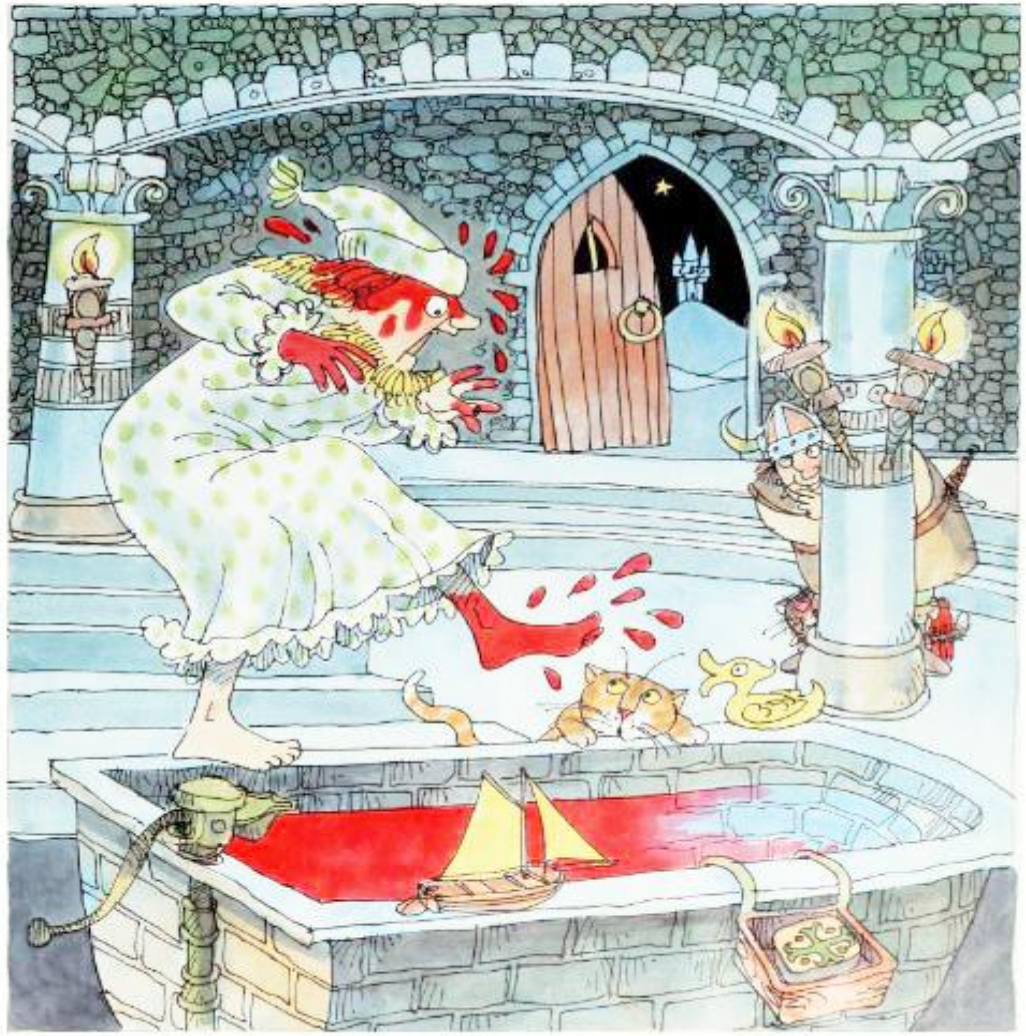

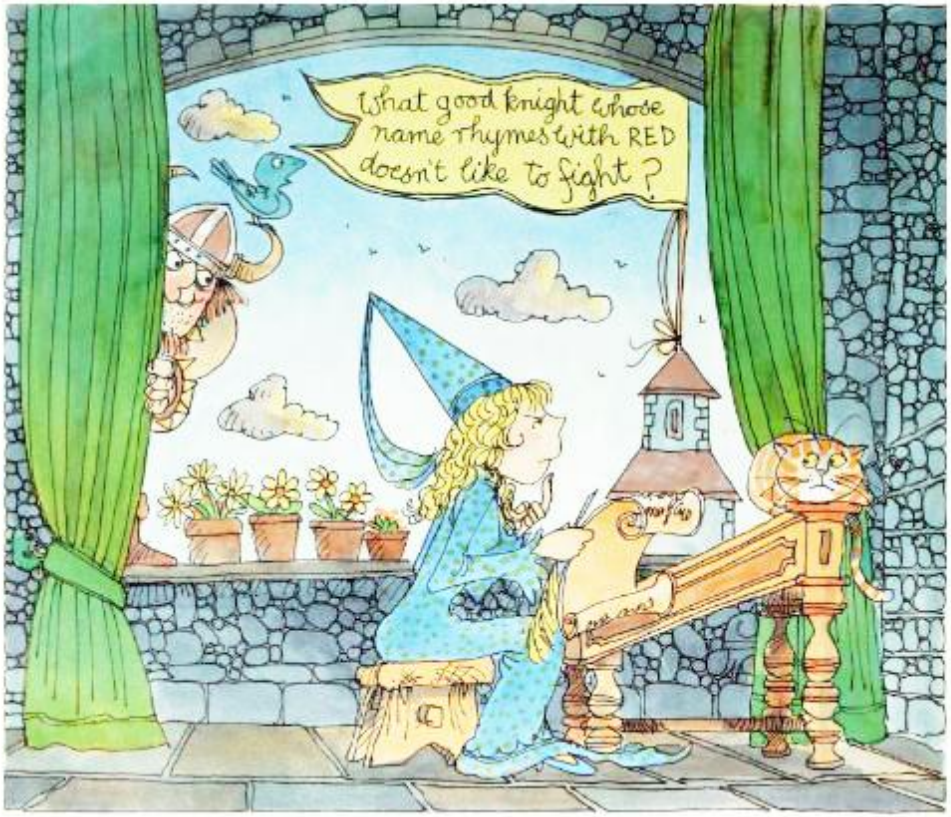

इसके बाद सर फ्रैड की कमज़ोरी के बारे में अफवाह फैलने लगी. एक झंडा भी लहराने लगा जिस पर लिखा था, “कौन हैं वह शूरवीर निर्भय, लड़ने से जिनको लगता है भय?”

लेडी वैंडिलिन ने झंडा देखा और घबरा गई. जो बुरा विचार उसके मन में आया उसे तुरंत उसने अपने मन से हटा दिया और सर फ्रैड के प्रेम पत्र को वह पढ़ने लगी. चिड़चिड़े मैल्विन ने उसके मन में संशय का बीज डालने के लिए फुसफुसा कर कहा, “शायद तुम्हारे शूरवीर उतने दिलेर और बहादुर नहीं हैं, तलवार के बजाय वह कलम अधिक पसंद हैं!”

लेडी वैंडिलिन के मन में दबे संशय के बीज से छोटा पौधा निकल आया जब उसे ध्यान आया कि सर फ्रैड ने उसकी बाँह पर बैठे मच्छर को मारने से इंकार कर दिया था और जब पालतू बाज़ के पंजों के नाखून काटते समय गलती से खून बहने लगा था तो उनका चेहरा फीका पड़ गया था.

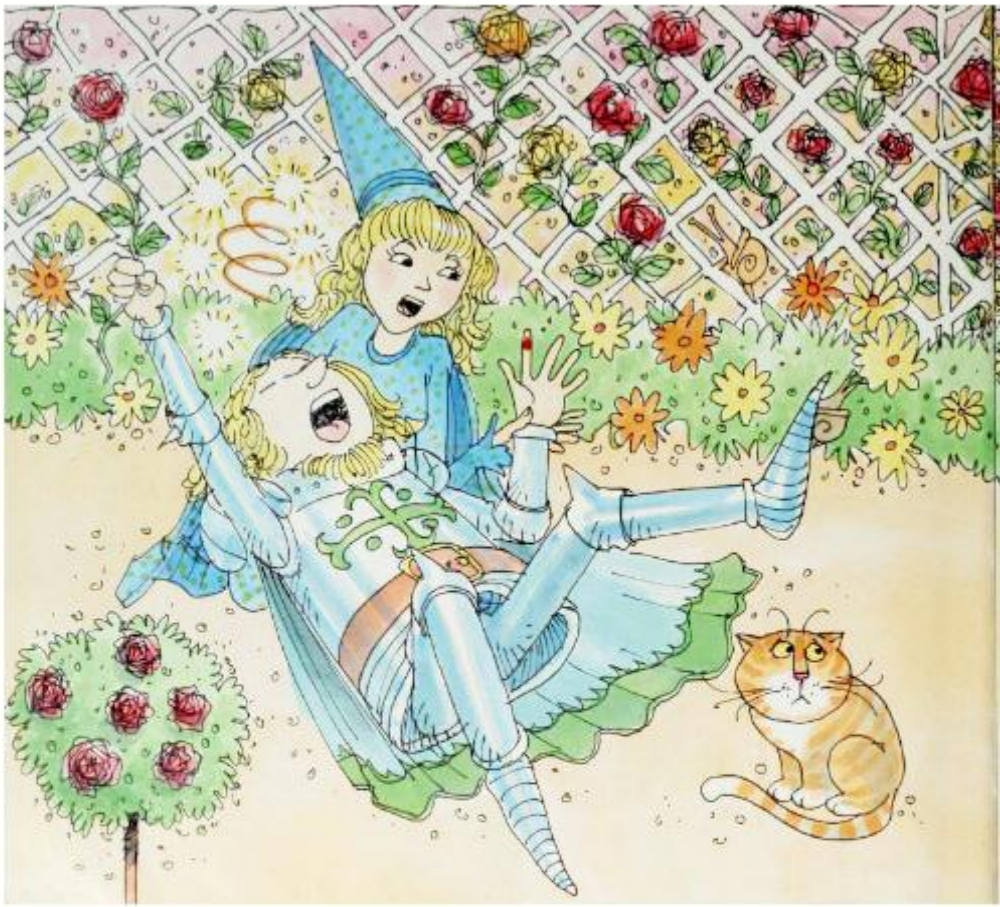

उस दिन लेडी वैंडिलिन ने अपने शूरवीर की दिलेरी और बहादुरी की परीक्षा लेने का निश्चय किया और कहा, “मेरे लिए सबसे ऊँची जगह से सबसे सुंदर गुलाब लेकर आओ.”

“ऐसा करके मुझे बहुत खुशी होगी,” सर फ्रैड ने कहा और जाफरी पर चढ़ने लगे.

जैसे ही उन्होंने एक फूल तोड़ा उनकी उंगली में कांटा चुभ गया. फूल को पकड़े हुए, सर फ्रैड घबरा कर अपनी प्रियतमा की बाँहों में बेहोश हो गये.

लेडी वैंडिलिन ज़ोर से पंखा झलने लगी और सोचने लगी कि सर फ्रैड का प्रेम प्रदर्शन क्या सच में अपनी कायरता को छिपाने का दिखावा तो न था?

“कैसा दयनीय दृश्य है! कमज़ोर हृदय आदमी को एक मूर्ख स्त्री होश में लाने की कोशिश कर रही है!” चोरी-छिपे वहाँ आकर चिड़चिड़े मैल्विन ने उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहा.

“क्या तुमने सुना जो उसने कहा?” लेडी वैंडिलिन ने सर फ्रैड को झकझोर कर उठाया. गुस्से से उसकी आँखें चमक रही थीं.

“मैंने सुना,” सर फ्रैड ने धीमे से कहा.

“तो तुम क्या करोगे?” लेडी वैंडिलिन का गुस्सा बढ़ने लगा.

“अपमान तो लड़ने का अच्छा बहाना होता है,” चिड़चिड़े मैल्विन ने घृणा से कहा. उसने अपने मोटे होंठों पर अपनी जीभ फेरी और बुरी नज़र से सर फ्रैड को देखा,

सर फ्रैड ने अपने आप को सँभाला. उनका मन अशांत था पर वह शांत-भाव से बोले, “ऐसी तुच्छ बातों पर लड़ने का मेरा कोई इरादा नहीं है. लाठियाँ और पत्थर मेरे शरीर को घायल कर सकते हैं लेकिन अपमान मेरे कवच को भेद नहीं सकते.”

“मुझे तुम्हारे कवच की कोई परवाह नहीं है. लेकिन मेरे सम्मान का क्या? क्या तुम मेरे सम्मान की रक्षा नहीं करोगे?” अपना पाँव पटकते और बाल झटकते हुए लेडी वैंडिलिन ने पूछा.

सर फ्रैड संकोच में पड़ गये.

चिड़चिड़ा मैल्विन बिलकुल भी नहीं झिझका. खुशी से फुदकते हुए उसने अपना दस्ताना सर फ्रैड के पाँव पर फेंक दिया.

शूरवीरों के नियमों के अनुसार दस्ताने का इस तरह फेंका जाना लड़ाई की चुनौती समझा जाता था, जिसे एक शूरवीर को स्वीकार करना ही पड़ता था. अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए सर फ्रैड को अब लड़ना ही था अन्यथा उन्हें शूरवीर की अपनी उपाधि गंवानी पड़ती और उससे भी बुरी बात थी, अपनी प्रियतमा भी गंवानी पड़ती.

सर फ्रैड ने दस्ताना उठाया और आह भरते हुए कहा, “कल, सूर्योदय के समय.”

“हाँ! हुर्रे!” चिड़चिड़े मैल्विन ने ललकारते हुए कहा.

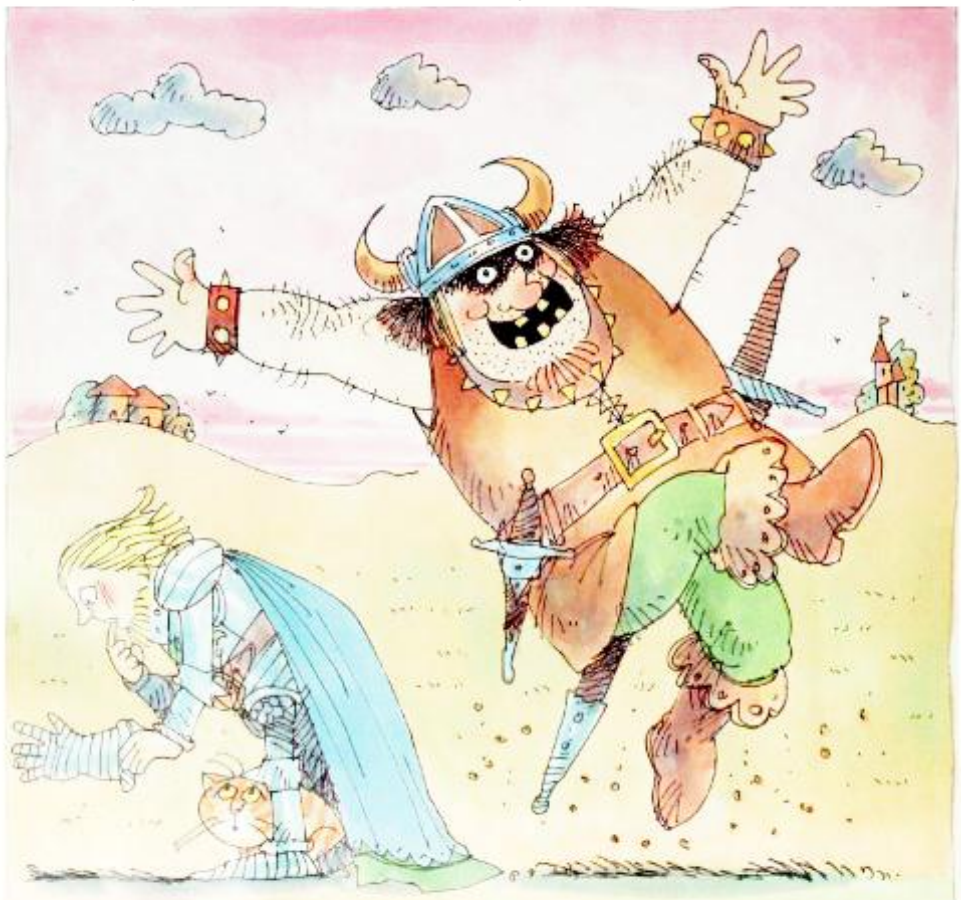

“लेकिन मेरा आग्रह है कि हम कुंद हथयारों से लड़ेंगे ताकि कोई घायल न हो,” सर फ्रैड ने कांपती आवाज़ में कहा.

“छी-छी!” चिड़चिड़े मैल्विन हुए कहा.

“कायर! डरपोक! भगोड़ा शूरवीर!” लेडी वैंडिलिन ने कहा और गुस्से में पाँव पटकती हुई चली गई.

उस रात सर फ्रैड एक शूरवीर समान अच्छे से सो न पाये. वह बिस्तर में करवटें लेते रहे. उनके मन में विचारों का तुफान था-कभी वह भाग जाने की बात सोचते, कभी लड़ाई की, कभी घायल होने की. पर सबसे बुरी बात थी कि उनकी प्रियतमा उन्हें कायर समझती थी.

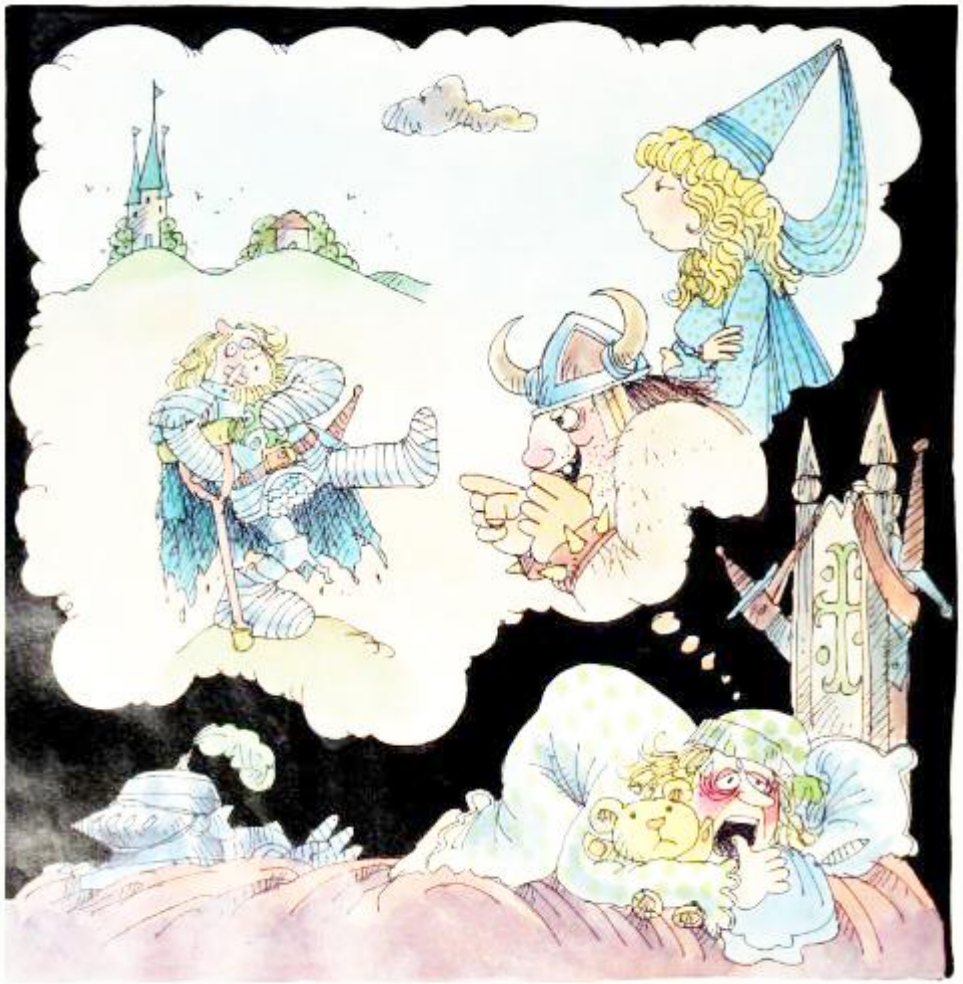

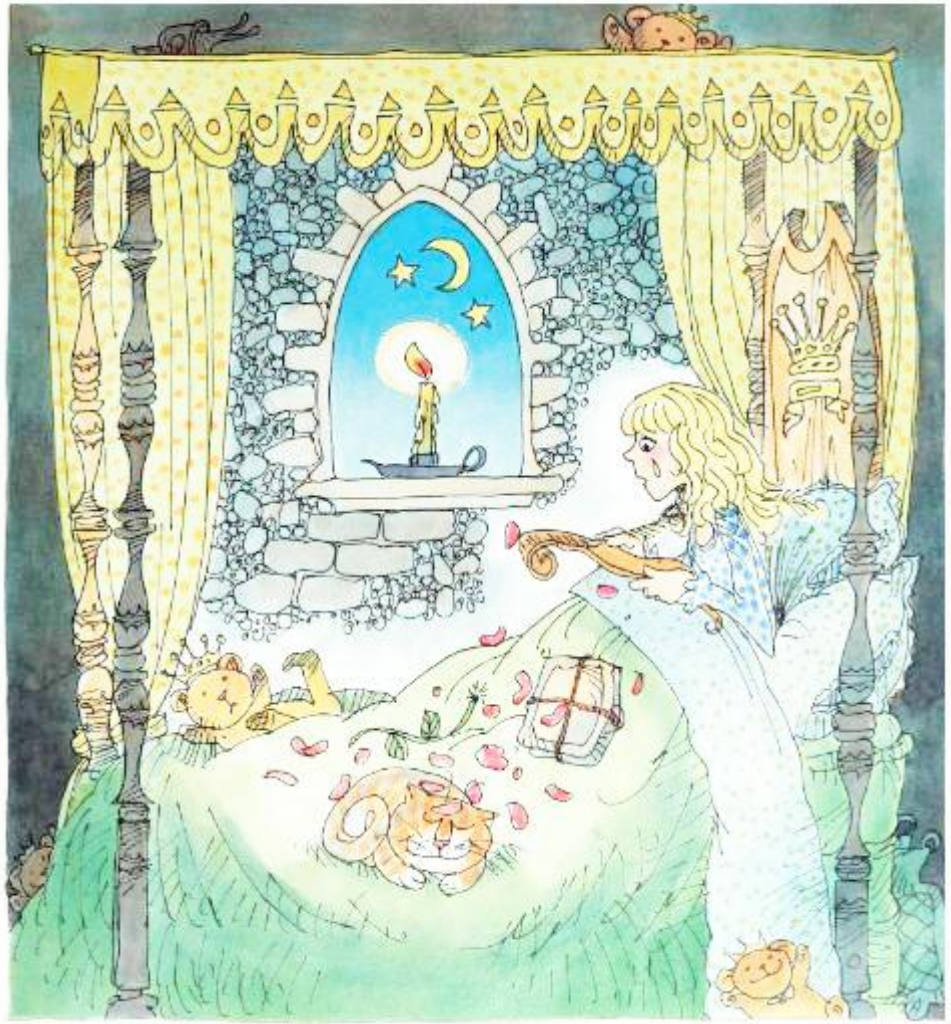

लेडी वैंडिलिन भी परेशान थी. वह गुलाब की पंखुड़ियाँ तोड़ती रही और अपनी तेज़ ज़बान को भी उसने काटा. फिर उसने पत्र लिख कर सर फ्रैड से क्षमा मांगी और सौभाग्य का एक प्रतीक भेजा.

भोर से पहले ही, अंधेरे में, लाचार सर फ्रैड ने अपनी तलवार को चमकाया और अपना कवच पहना. वह लड़ाई के लिए जाने ही वाले थे कि लेडी वैंडिलिन का पत्र और उपहार उन्हें मिला.

उपहार सुवर्ण दर्पण था और पत्र में लिखा था, "अपने बुरे व्यवहार के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ."

सर फ्रैड ने आह भरी और दर्पण को अपनी छाती के ऊपर लटका लिया.

चिड़चिड़े मैल्विन ने भी लड़ाई के लिए तैयारी की. उसने भाले के सिरे पर ज़हरीली नोक लगा दी और एक थैली में हत्यारी मधुमक्खियाँ रख लीं. "ईमानदारी के बजाय बेईमानी में ज़्यादा मज़ा आता है." उसने अपने आप से कहा. "जो काम हथियार नहीं कर सकेंगे, वह काम हत्यारी मधुमक्खियाँ कर देंगी."

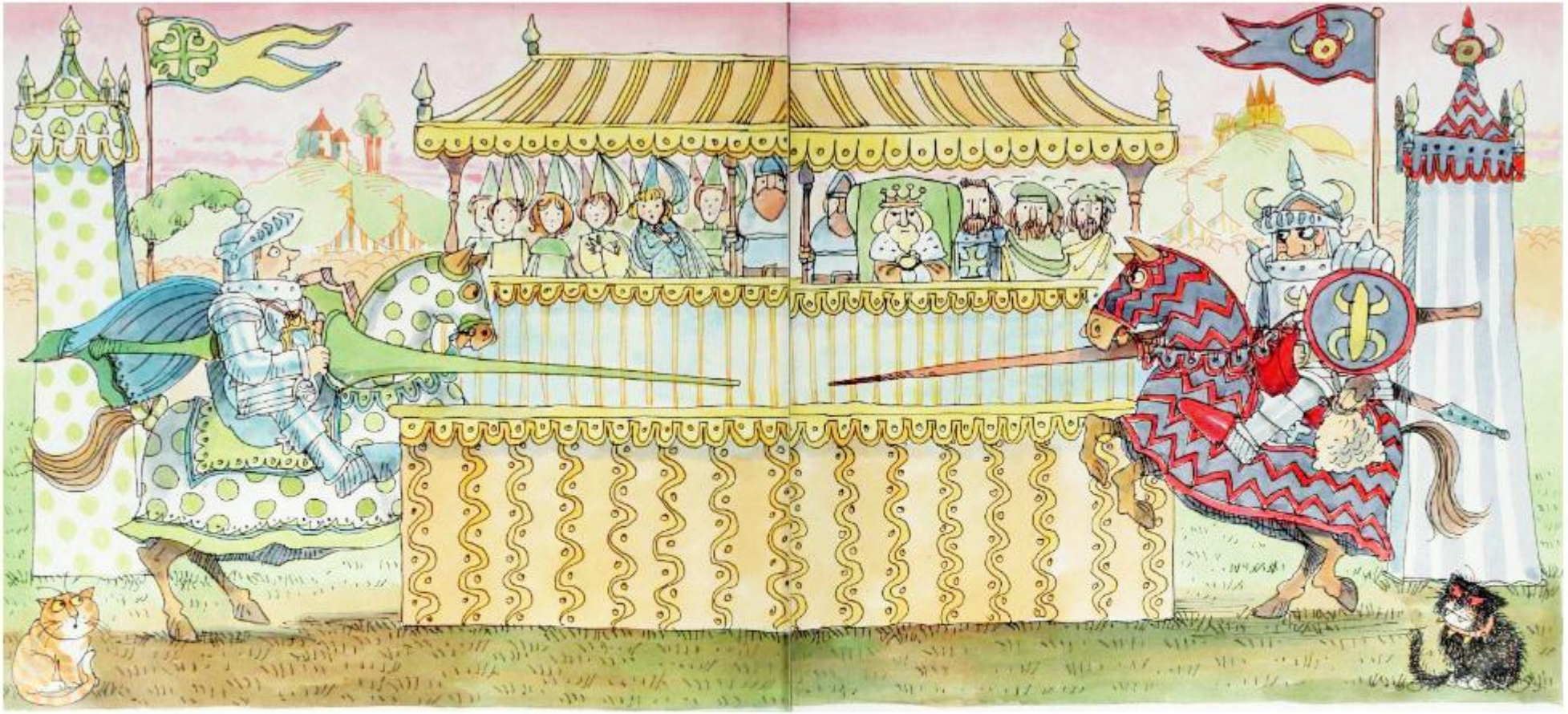

सर फ्रैड और चिड़चिड़े मैल्विन लड़ाई के मैदान में आए और तिनका खींचने के लिए तैयार हो गए. दोनों में जो कोई छोटा तिनका खिंचता उसका चेहरा सूरज की ओर होना था.

चिड़चिड़े मैल्विन ने छोटा तिनका खींचा, लेकिन सर फ्रैड ने आग्रह किया कि वह अपना तिनका उससे बदलेंगे, “एक शूरवीर का कर्तव्य होता है कि वह दूसरों के प्रति उदार हो.”

जैसे ही सूर्य उदय हुआ, चिड़चिड़ा मैल्विन और सर फ्रैड आमने-सामने हो गए. नगाड़े की आवाज़ के साथ ही उद्घोषक ने चिल्लाकर कहा, “आगे बढ़ो!”

सर फ्रैड और चिड़चिड़े मैल्विन ने अपने-अपने घोड़ों को एड़ लगाई और उन्हें तेज़ गति से दौड़ाया. द्वंद्व युद्ध के नियम स्पष्ट थे. जो योद्धा सबसे पहले दूसरे को घोड़े से गिरा देता था वह विजयी होता था. विजेता तय कर सकता था कि पराजित को क्षमा करना था या दंडित.

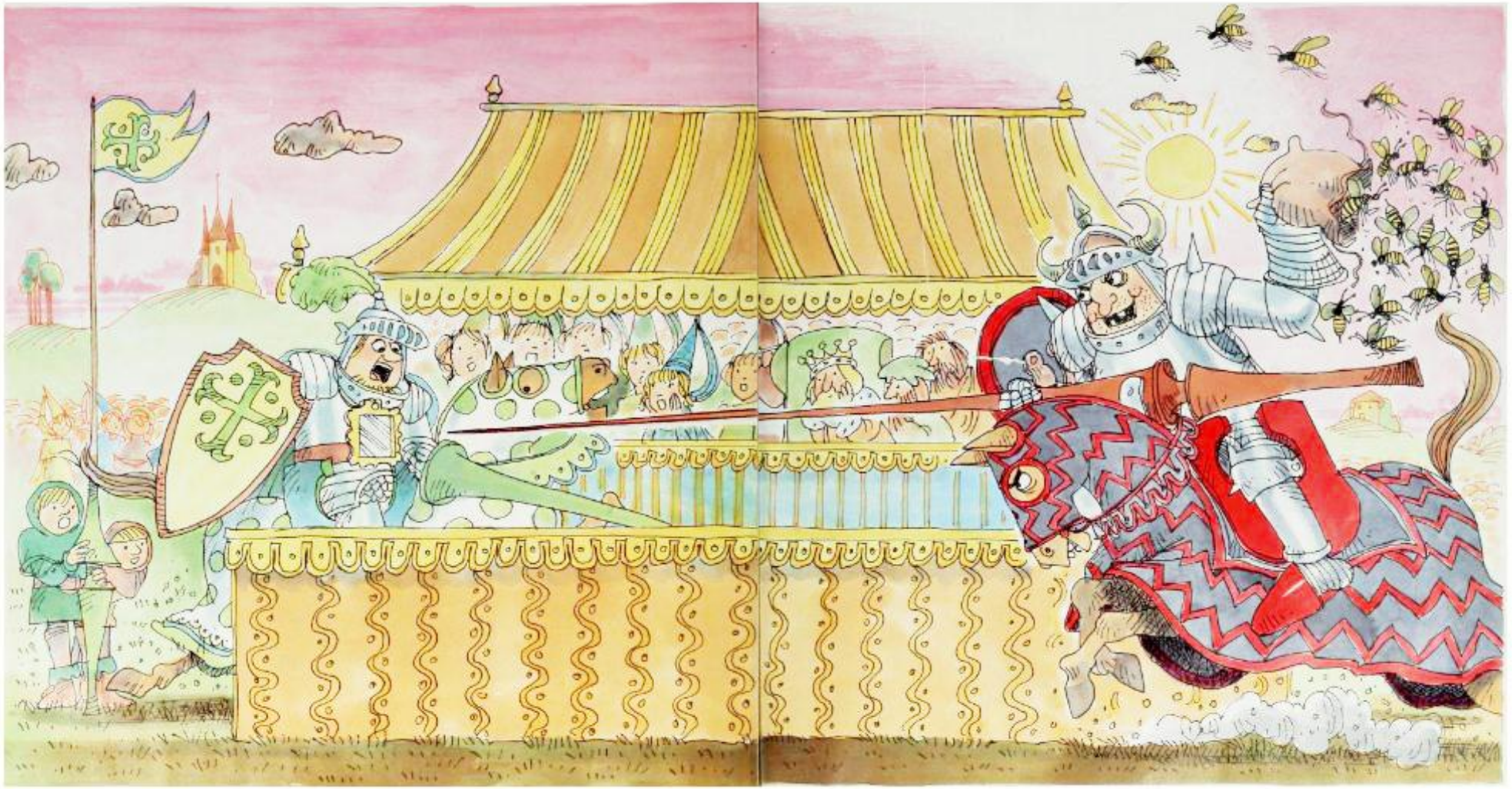

आँखों में चमकते सूर्य के प्रकाश ने सर फ्रैड को चकाचौंध कर दिया. उन्होंने भाले से पहले वार किया. वह चूक गये.

चिड़चिड़े मैल्विन ने आँखें तरेरीं, थैली में रखी हत्यारी मधुमक्खियाँ को छोड़ दिया और ज़हर की नोक वाले भाले से सर फ्रैड के हृदय पर वार किया.

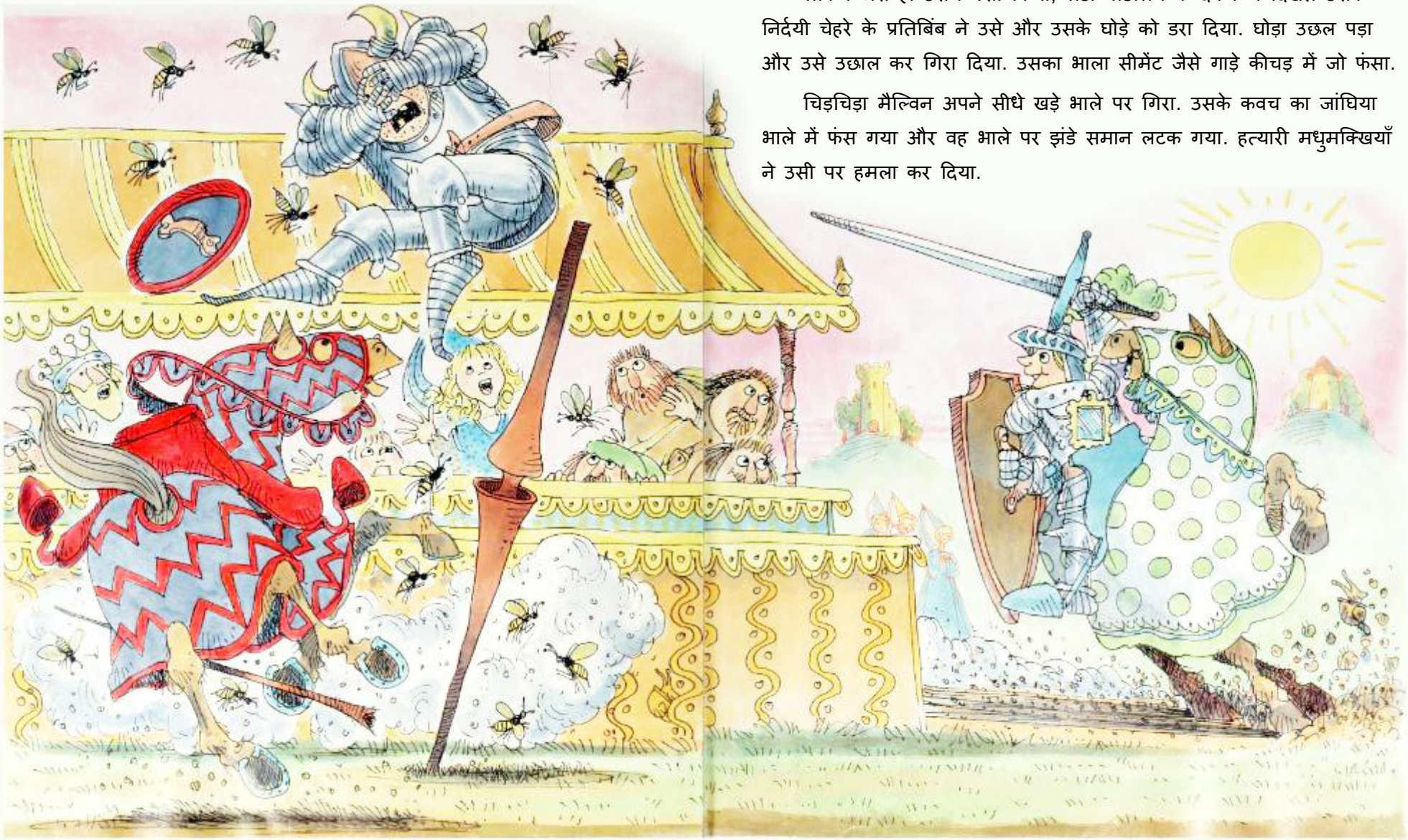

लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, लेडी वैंडिलिन के दर्पण में दिखते उसके निर्दयी चेहरे के प्रतिबिंब ने उसे और उसके घोड़े को डरा दिया. घोड़ा उछल पड़ा और उसे उछाल कर गिरा दिया. उसका भाला सीमेंट जैसे गाड़े कीचड़ में जो फंसा.

चिड़चिड़ा मैल्विन अपने सीधे खड़े भाले पर गिरा. उसके कवच का जांघिया भाले में फंस गया और वह भाले पर झंडे समान लटक गया. हत्यारी मधुमक्खियाँ ने उसी पर हमला कर दिया.

“मदद करो!” चिड़चिड़ा मैल्विन दया की भीख मांगने लगा. लज्जा से उसका चेहरा लाल हो गया था.

“दूर हटो!” चिड़चिड़े मैल्विन को अपनी कुंद तलवार से छूते हुए सर फ्रैड ने कहा, “बेईमानी के लिए तुम्हारा इस तरह लटकना ही उचित दंड है, मरना नहीं.”

फिर वह लेडी वैंडिलिन की ओर घूमे और उससे कहा, “यह सच है, लहू देख कर मैं घबरा जाता हूँ. यह भी सच है, मुझे लड़ना पसंद नहीं है, खासकर तुम से. अगर इस कारण मैं एक अच्छा शूरवीर योद्धा नहीं हूँ तो फिर चाहे मैंने यह लड़ाई तो जीत ली, पर तुम्हारा प्यार मैंने खो दिया.”

“कभी नहीं!” लेडी वैंडिलिन ने कहा. “मैं तुम्हें तुम्हारे इसी रुप में प्यार करती हूँ, चाहे हम हर बार आपस में सहमत नहीं होते, तब भी. मुझे क्षमा करो, एक तुच्छ बात पर तुम से झगड़ना मेरी मूर्खता थी.”

“अवश्य थी!” सर फ्रैड ने निडरता से अपनी प्रियतमा से कहा. फिर वह एक-दूसरे के गले लगे और एक साथ घोड़े पर सवार होकर सुहावनी सुबह का आनंद लेने के लिए चल दिए.

समाप्त